MODEL QUESTION PAPER - 01

(Academic Session : 2020 - 2021)

HINDI SOLUTION

खंड 'अ'

उ.1 (i) (स) वैदिक युग

(ii) (स) वैदिक युग को

(iii) (ब) स्वर्ण काल

(iv) (स) वैदिकयुग

(v) (अ) जब बौद्ध युग का आंरभ हुआ

(vi) (स) आधुनिक–आंदोलन

(vii) (अ) बुद्ध ने

(viii) (अ) ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

(ix) (स) बुद्ध

(x) (स) समाज–विरोधिनी संस्था

उ.2 (i) (ब) मृत्यु का

(ii) (ब) विश्राम – स्थल

(iii) (अ) मृत्यु रुपी सरिता

(iv) (अ) जिसकी –तृप्ति आत्म – बलि पर हो निर्भर !

(v) (स) निष्प्राण

उ.3 (i) (द) एंकर बाइट

(ii) (द) लाइव

(iii) (द) एंकर पैकेज

(iv) (अ) रीडिफ

(v) (अ) तहलका डाट कॉम

उ.4 (i) (अ) क्योकि उसकी प्रेयसी ने उसे हर स्थिति में स्वीकारा है

(ii) (अ) प्रेयसी के लिए

(iii) (द) उपर्युक्त सभी को

(iv) (अ) अपनी प्रिय के लिए

(v) (स) अनुभव को

ALLEN

उ.5 (i) (द) पहलवान की ढोलक

(ii) (द) फणीश्वर नाथ रेणु

(iii) (अ) प्रकृति दुखी लोगों के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रही थी

(iv) (अ) गाँव के सारे कुत्तों के लिए

(v) (अ) निस्तब्धता

उ.6 (i) (अ) किशन दा का

(ii) (अ) बेटी को
(iii) (ब) नम हो गई
(iv) (अ) दत्ता राव सरकार ने
(v) (द) खेलने नहीं जाना
(vi) (स) घरों और गलियों को देखकर
(vii) (द) उपर्युक्त तीनों जगह
(viii) (ब) पीला सितारा लगाकर निकलना पड़ता था
(ix) (अ) फ्री नीदरलैंड वाले
(x) (अ) केबिनेट मंत्री वोतके स्टीन ने

खण्ड 'ब'

उ.7 (अ) महँगाई

महँगाई, मुद्रास्फीति से भी जोडी जाती है, यह भी माना जाता है कि जब अर्थव्यवस्था सुधरती है तो लोगो की आमदनी बढती है। अब जब आमदनी बढती है तो मुद्रा–स्फीति बढती है। बाजार में माँग बढती है और फिर महँगाई का बढना स्वाभाविक है। इसी से महँगाई को अर्थव्यवस्था की ड्राइविग फोर्स भी माना जाता है, पर जब यह आसमान छूने लगती है तो अर्थव्यवस्था के मार्ग में रोडा भी बन जाती है। अर्थशास्त्र अभी भी यह व्याख्या नही कर सका है कि किस माँग तक कि महँगाई ड्राइविंग फोर्स है और कहाँ पहुचँकर यह रोडा बन जाती है। पर समस्या हैं वर्तमान महँगाई, यह कितनी बढ़ रही है। कहाँ बढ़ रही है। इसके आँकडे जमा करना और उसका सम्बन्ध मूल्य सूचकांक से जोडना सहज सम्भव नही हैं इसी से सरकार कान में तेल डाले बैठी है। क्योकि प्याज की कीमत 40 रूपयें पहुचँ गयी, टमाटर 40 रूपयें पहुचँ गया, दालें 60–70 रूपयें के इर्द–गिर्द घुम रही है। भला यह मुद्रा स्फीति के आँकडे में कैसे समा सकती है। यह तो गरीब से ही पूछना होगा। जो व्यक्ति 3500 रू मासिक कमाता है। और अपने वृद्ध माता–पिता, पत्नी और तीन बच्चों का पेट भरता है। वह तो वही बता सकता है। अगर वह 40 ग्राम दाल बनाता है ओर मात्र दाल रोटी खाता हैं वह भी बिना घी की तो एक किलो आटा सहित उसका खर्चा 40 रूपयें बैठ जाता है। मात्र दाल रोटी की यह महँगाई गरीब का ही नही, मध्यमवर्गीय व्यक्तियों को भी प्रभावित करती है और यहाँ अर्थशास्त्र घुटने टेक देता है। समाजशास्त्र कहता है – गरीबों को भी जीने का अधिकार हैं और उन्हें दो समय की रोटी मिलनी ही चाहिए। अर्थशास्त्र कहता हैं – इसके दो ही उपाय है – सरकार समस्त वितरण को अपनी एजेन्सी के माध्यम से वितरित करायें और सब्सिडी के आधार पर किमतें उस स्तर पर ले आयें, जहाँ गरीब आदमी अपनी क्रय क्षमता के दायरे में रहकर रोटी दाल खा सकें अथवा आयत या उत्पादन बढ़ाकर बाजार में समग्री की उपलब्धता बढ़ा दे, सामान सस्ता हो ही जायेगा। पर यहाँ भी समस्याएँ है – सरकारी वितरण प्रणली और कन्ट्रोल पद्धति हमारे यहाँ कभी भी कारगर नही हो सकी, क्यों ? यह बहस का विषय हैं पर प्रत्यक्ष अनुभव तो ऐसा ही है। उत्पादन कढाना भी हमारे बस की बात नही है। प्रतिवर्ष हजारों एकड कृषियोग्य भूमि सरकारी संरक्षित उद्योग निगलते जा रहे है। सडकें, चाटती जा रही हैं और भूमि बढायी नही जा सकती। साथ ही उत्पादन क्षमता भी चौगुनी नही बढायी जा सकती है और न ही कोई ऐसी तकनीक अभी तक विकसित हो सकी है कि एक साल में ही उत्पादन उतना बढ जायेगा कि माँग–पूर्ति का सन्तुलन स्थापित हो जायेगा। अब रही आयात की समस्या– यह एक बडा मसला है। जिसमें दृढ राजनैतिक इच्छा शक्ति की आवश्यकता है और वह इस धरती पर अभी तक तो पनप नही सकी है। भविष्य में क्या होगा ? यह तो अर्थशास्त्री ही बता सकेगे। पर कुछ होना आवश्यक है और वह भी अति शीध्र अन्यथा यह महँगाई औसत आदमी के लिए प्राणलेवा बन जायेगी।

उ.8 सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

राज. उच्च. माध्य. विद्यालय,

रामगढ़।

विषय : विद्यालय में व्याप्त ..... सम्बधी अव्यवस्था की ओर ध्यानाकर्षण हेतु।

मान्यवर,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि विगत कई माह से विद्यालय में अव्यवस्था की स्थिति बनी हुई है, जिसके कारण छात्रों को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। यथा कक्षा–कक्ष के छात्र संख्या के अनुपात में पर्याप्त फर्नीचर नहीं है और जो है वह भी अधिकांश टूटा हुआ है। प्रयोगशाला कक्ष की स्थिति भी अच्छी नहीं है। प्रयोगशाला कक्ष में न तो पर्याप्त उपकरण है और न प्रयोग में आने वाली सामग्री ही उपलब्ध रहती है। यहाँ तक कि पुस्तकालय भी अव्यवस्था का शिकार बना हुआ है। हमारे विद्यालय के पुस्तकालय में प्रर्याप्त मात्रा में ज्ञानोपयोगी पुस्तकों का संग्रह है, किन्तु पुस्तकालय का अधिकांश समय बन्द रहना, अव्यवस्थित तरीके से पुस्तकों का रख–रखव, पुस्तकालय अध्यक्ष का छात्रों के साथ उपेक्षित व्यवहार जैसे कुछ ऐसे कारक है जिनके कारण छात्र पुस्तकालय सुविधा का यथोचित लाभ नहीं उठा पाते है। खेल सम्बन्धी गतिविधियाँ तो जैसे बन्द प्रायः पड़ी है। विद्यालय में पर्याप्त खेल का मैदान उपलब्ध है। खेल सामग्री क्रय करने हेतु शारीरिक शिक्षक की उदासीनता एवं उत्साह हीनता के कारण खेल कूद सम्बन्धी गति विधियाँ संचालित नहीं हो पा रही है।

अतः आपसे निवेदन है कि इस ओर ध्यान देकर अव्यवस्थित व्यवस्था को दुरस्त कर सुचारू ढंग से क्रियान्वित किये जाने का प्रयास करें ताकि छात्र प्राप्त सुविधाओं से लाभान्वित हो सकें।

दि. 5 सित. 2020

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

क ख ग

उ.9 (i)
- नाटक में नाटककार के पास अपनी और से कहने का अवकाश नहीं रहता।
- यह संवादों द्वारा ही वस्तु का उद्घाटन तथा पात्रों के चरित्र का विकास करता है।
- अतः इसके संवाद सरल, सुबोध, स्वभाविक तथा पात्रअनुकूल होने चाहिए।
- गंभीर दार्शनिक विषयों से इसकी अनुभूति में बाधा होती है।
- इसलिए इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(ii) कथ्य, कथानक और पात्रों की सत्यता देशकाल वातावरण में उन्हें और ज्यादा विश्वसनीय बना देती है। कहानी के सभी पात्र योग्य वातावरण में ही सजीव होते है।

उ.10 (i) समाचार पत्रों को पढकर स्पष्ट होता है कि प्रायः सभी समाचार एक विशेश शैली में लिखे जाते है। इन समाचारों में किस भी विचार समस्या या घटना के सबसे महत्वपूर्ण अंश को प्रथम पैराग्राफ में या प्रांरभ में लिखा जाता है। उसके पश्चात विचार, समस्या या घटना से संबंधित कम महत्वपूर्ण सूचना अथवा तथ्य के विषय में लिखा जाता है। यह प्रक्रिया समाचार समाप्त होते तक निरंतर चलती रहती है। लेखन की इस शैली को उल्टा पिरामिड शैली (इवर्टेड पिरामिड स्टाइल) कहते है। समाचार लेखन की यह अत्यंत लोकप्रिय तथा उपयोगी शैली है।

(ii) पिछले कुछ सालों से आर्थिक पत्रकारिता का महत्व अधिक हो गया है। इसका मूल कारण है कि देश की राजनीति और अर्थव्यवस्था से अत्यधिक परिवर्तन आया है। आर्थिक उदारीकरण व देश में खुली अर्थव्यवस्था लागू होने के पश्चात अर्थव्यवस्था में अत्यधिक परिवर्तन आया है। अतः एक आर्थिक पत्रकार देश राजनीति में और उसमें हो रहे परिवर्तनों को जानकारी होनी चाहिए। आर्थिक मामलों की पत्रकारिता अन्य पत्रकारिता की अपेक्षा काफी जटिल होती है। इसका कारण यह है कि इसकी शब्दावली के बारे में सामान्य लोगों को पता ही नहीं होता। इस शब्दावली को साधारण लोगों को समझ में आने लायक बनाना आर्थिक मामलों का पत्रकार बडी कुशलता से करता है। इस प्रकार आर्थिक मामलों पर पत्रकारिता करते समय लेखन में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह किस वर्ग के पाठक के लिए लिखा जा रहा है।

उ.11 (i) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कार्यक्रम करूणा दिखाने के लिए बनाया जा रहा है। किन्तु इसमें करूणा का बनावटी मुखौटा है। उद्देश्य अपने चैनल के लिए एक बिकाऊ कार्यक्रम बनाना है। अपाहिज से जो बेहूदे प्रश्न पूछे गए हैं उनमें करूणा नही, क्रूरता है।

इन प्रश्नों में कही भी करूणा का भाव नही है। अपाहिज से कहा जा रहा है कि कोशिश कीजिए। अन्यथा यह अवसर खो देगे। मानो इस अवसर को पाकर उसका अपाहिजपन दूर हो जाएगा। अपने स्वार्थ के लिए किसी अपाहिज का मजाक बनाना क्रूरता ही है।

(ii) कवि को अपने प्रिय का उसे सदा घेरे रहना, उसके जीवन पर प्रकाश फैलाए रखना, उस पर ममता उडेलते रहना और कोमलता का स्पर्श देना असहनीय प्रतीत होता है। क्यों – इससे उसकी अपनी आत्मा कमजोर हो गई है। उसे अपने पर विश्वास नही रहा। उसे अपने भविष्य की आंशकाएँ सताने लगी है कि प्रिय के न रहने पर उसका क्या होगा ?

(iii) कवि विस्मृति के घने अँधेरे में लापता हो जाना चाहता है। वह अपने प्रियतम को भूल जाना चाहता है। क्योकि प्रियतम का निरन्तर मिलने वाला प्रेम उसे सहन नही हो रहा। इस स्नेह पर निर्भर रहकर कवि अपने स्वतन्त्र मौलिक व्यक्तित्व से वंचित हो चुका है। वह अपने बूते पर कुछ भी कर नही पाता है। उसको अपने प्रियतम की प्रेरणा की निरन्तर जरूरत रहती है। उसने माना है – जो कुछ भी जाग्रत है, अपलक है सवेदन तुम्हारा है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए कवि अपने प्रियतम को भुलाना चाहता है।

उ.12 (i) कवि नील जल के माध्यम से नीले आकाश का चित्रण करना चाहता है। सूरज का नित–नित बढते जाना किसी रूपसी नारी की गोरी देह का खिलते जाना है। इस प्रकार कवि नीले आकाश में विकीर्ण होती सूरज की धवल किरणों के प्रकाश का चित्रण करना चाहता है।

(ii) लक्ष्मण शक्तिबाण लगने से मूर्च्छित हो गए। यह देखकर राम भावुक हो गए तथा सोचने लगे कि पत्नी के बाद अब भाई को खोने जा रहे है। केवल एक स्त्री के कारण मेरा भाई आज मृत्यु की गोद में जा रहा है। यदि स्त्री खो जाए तो कोई बडी हानि नही होगी, परन्तु भाई के खो जाने का कंलक जीवनभर मेरे माथे पर रहेगा। वे सामाजिक अपयश से घबरा रहे थे।

(iii) सूर्योदय से पूर्व उषा का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है। भोर के समय सूर्य के किरणें जादू के समान लगती है। इस समय आकाश का सौन्दर्य क्षण – क्षण में परिवर्तन होता रहता हैं यह उषा का जादू हैं नीले आकाश का शंख सा पवित्र होना, काली सिल पर केसर डालकर धोना, काली स्लेट पर लाल खडिया मल देना, नीले जल में गोरी नायिका का झिलमिलाता प्रतिबिन्ब आदि दृश्य उषा के जादू के समान लगते है। सूर्योदय होने के साथ ही ये दृश्य समाप्त हो जाते है।

उ.13 (i) लेखक के अनुसार – कैपिटलिस्टिक अर्थशास्त्र अर्थात पूँजीवादी अर्थशास्त्र, जो धन को अधिक से अधिक बढाने पर बल देता है। मायावी है, छली है और अनीतिपूर्ण है। उसके कारण निम्नलिखित है –

1 बाजार का मूल दर्शन है – आवश्यकताओं की पूर्ति करना। यदि इस लक्ष्य को छोडकर व्यापारी धन कमाने की होड में लग जाएँ तो बाजार का असली लक्ष्य ही नष्ट हो जाता है। यह बाजार के नाम पर भटकाव है। ग्राहक को आवश्यकता की वस्तु उचित दाम पर देने की बजाय अगर पैसा कमाना लक्ष्य रख लिया जाए तो बाजार का असली लक्ष्य पूरा ही नही हो पाता।

2 पैसा कमाने का लक्ष्य साधने से व्यापार में कपट बढता है। व्यापारी ग्राहक की हानि करके भी अपना लाभ कमाना चाहते है। इससे शोषण की शुरूआत हो जाती है। अतः यह अनीतिपूर्ण है।

3 ऐसे पूँजीवादी बाजार से मानवीय प्रेम, भाईचारा, तथा सौहार्द समाप्त होता है। सभी लोग ग्राहक और विक्रेता बनकर रह जाते है।

4 पूँजीवादी अर्थशास्त्र के कारण ही बाजार में फैंसी चींजो का प्रचलन बढता है। लोग बिना आवश्यकता के ही उसके रूप जाल में फँसने लगते है। इसलिए लेखक ने उसे मायावी कह दिया है।

(ii) राजा साहब की अनुमति मिलते ही बाजे बजने लगे। दर्शकों में उत्तेजना फैल गई और वे कोलाहल करने लगे। मेले के दुकानदार दुकाने बन्द करके कुश्ती देखने आ पहुँचे। ढोल की आवाज सुनाई दी। लुट्टन को चाँद सिंह ने कसकर दबा लिया। दर्शकों ने तालियाँ बजाई – '' अरे गया गया। हलुआ हो जाएगा, हलुआ ! हँसी – खेल नही – शेर का बच्चा है ..... बच्चू।'' लुट्टन की गर्दन पर केहुनी डालकर चाँद उसे चिंत करने की कोशिश में लगा था। बादल सिंह अपने शिष्य का उत्साह बढा रहा था। लुट्टन की आँखे बाहर निकल रही थी। उसकी छाती जा रही थी। सभी चाँद सिंह को शाबाशी दे रहे थे। लुट्टन

के पक्ष में कोई नही था। ढोल की ताल पर वह अपने दाव – पेंचों की परीक्षा ले रहा था। अचानक ढोल की आवाज आई – 'धाक धिना, तिरकट – तिना' अर्थात 'दाँव काटो बाहर हो जा।'' अचानक लुट्टन ने चाँद की पकड से छूटकर उसकी गर्दन पकड ली। उसने चालाकी से दाँव और जोर लगाकर चाँद को जमीन पर दे मारा। तभी ढोल की आवाज 'धिना – धिना' अर्थात 'चित करो' सुनकर उसने अंतिम जोर लगाकर चाँद को चित कर दिया। चाँद सिंह के साथ कुश्ती में लुट्टन का समर्थक कोई नही था। राजा, राजकर्मचारी तथा अधिकांश दर्शक चाँद सिंह के पक्ष में थे। लुट्टन केवल ढोल की आवाज के बल पर अपनी शक्ति, साहस तथा दाँव – पेचों की परीक्षा ले रहा था। वह ढोल की आवाजों को ध्यान से सुनता था। उस कुश्ती में उसे ढोल की आवाजों से प्राप्त संकेतों का ही समर्थन मिल रहा था। ढोल के संकेतों पर चलकर ही वह कुश्ती का विजेता बना था। कुश्ती में 'शेर के बच्चे' की उपाधि प्राप्त पहलवान चाँद सिंह को हराने पर राजा साहब ने प्रसन्न होकर लुट्टन को राज पहलवान बना दिया। वह सदा के लिए दरबार का पहलवान हो गया। राजा साहब उसको लुट्टन सिंह कहकर पुकारने लगे।

उ.14 (i) इन्दर सेना दस – बारह से सोलह–अठारह वर्ष के लडकों का एक दल था। जब वर्षा नही होती थी और लोग गर्मी के कारण त्राहिमाम करने लगते थे तब वे काले मेघा पानी दे कहकर बादलों से वर्षा करने को कहते थे। ये लडके नंगे होकर केवल एक कच्छा या लगोटी पहने, गली–गली में घूमते थे। वे 'बोलों गंगा मैया की जय' का नारा लगाते थे। वे किसी दुमंजिले मकान के नीचे एकत्र होकर पानी माँगते थे। तब स्त्रियाँ और लडकियाँ उनके ऊपर बाल्टी या घडों से पानी डालती थी। वे गली में कीचड में लेट जाते थे ओर उछल – कूद करते हुए अगले घर की ओर चले जाते थे। लोगों का विश्वास था कि इससे प्रसन्न होकर इन्द्र देवता पानी बरसाते है। लोग घृणावश इनकों 'मेढक – मण्डली' कहकर पुकारते थे।

(ii) लेखक के मत से दासता से अभिप्राय केवल अपनी कानूनी पराधीनता नही है। दासता की व्यापक परिभाषा यह है जिसमें किसी को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना। इसका सीधा अर्थ उसे दासता में जकडकर रखना होगा। इसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होनो पडता है।